कृषि विभाग हिमाचल प्रदेश

शून्य लागत प्राकृतिक खेती (प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अन्तर्गत)

शून्य लागत प्राकृतिक खेती विधि से फसलों को उगाने में किसी भी प्रकार की रासायनिक खादों, कीटनाशकों इत्यादि के प्रयोग के बिना सफल एवं सतत् खेती कर किसान जहर मुक्त खाद्यान्न का उत्पादन करता है। इस तरह वह खेती उत्पादन लागत को बहुत ही कम या शून्य कर अपने परिवार की आर्थिकी को बढ़ा सकता है। साथ ही समाज के अन्नदाता के रूप में स्वस्थ भोज्य पदार्थ उपलब्ध करवा कर 'स्वस्थ भारत – समृद्ध परिवेश' के स्वप्न को भी साकार करने में अपनी समर्थ भूमिका अदा कर सकता है।

इस विधि में मुख्य फसल की लागत का मूल्य अन्तर्वर्ती/सह फसल के उत्पादन से निकाल लेना और मुख्य फसल शुद्ध मुनाफे के रूप में लेना ही 'शून्य लागत खेती' है, जिसमें खेती के लिए आवश्यक कोई भी संसाधन बाजार से नहीं खरीदना है। इन सभी संसाधन या आदानों की निर्मिती घर में, खेत में या गांव में ही करनी है। जो भी संसाधन हम उपयोग में लायेंगे उसके उपयोग से जीव, जीवाणु, जमीन, पानी एवं पर्यावरण की क्षति नहीं होनी चाहिए तथा हर मुख्य फसल के साथ सह फसल लेनी ही है।

भूमि की उत्पादन क्षमता भूमि की उर्वरा शक्ति पर निर्भर होती है। इस उर्वरा शक्ति को बढ़ाने में एक जैव रासायनिक पदार्थ 'ह्यूमस', की पौधों का पोषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः ह्यूमस निर्माण के लिए जड़ों के पास 'जामुन' के रूप में हम 'देसी गाय मूत्र एवं गोबर' आधारित घनजीवामृत एवं जीवामृत डालते हैं।

देसी गाय

घनजीवामृत

जीवामृत

बीजामृत से बीजोपचार

शून्य लागत प्राकृतिक खेती विधि में प्रयोग होने वाले विभिन्न घटकों को बनाने की विधियाँ

(सभी सामग्री 5 बीघा या 10 कनाल भूमि के लिए हैं)

जीवामृत

क्र0	सामग्री	मात्रा
1	पानी	200 लीटर
2	गौमूत्र	8 – 10 लीटर
3	गोबर	10 कि0 ग्रा0
4	गुड़ या मीठे फलों का गूदा	1 कि0 ग्रा0
5	बेसन या किसी भी दलहन का आटा	1 कि0 ग्रा0
6	खेत के मेड़ या जंगल की मिट्टी	50 ग्राम (1 मुट्ठी)

विधि : उपरोक्त सामग्री को टंकी में घड़ी की सूई की दिशा में 2 – 3 मिनट तक घोल कर बोरी से ढकें तथा 72 घंटे तक छांव या किसी छप्पर के नीचे रखें। सुबह शाम 2 – 2 मिनट के लिए घोलें। **घोल का प्रयोग 10 दिन के अन्दर करें।**

घनजीवामृत

क्र0	सामग्री	मात्रा
1	गौमूत्र	आवश्यकतानुसार
2	गोबर	100 कि0 ग्रा0
3	गुड़ या मीठे फलों का गूदा	1 कि0 ग्रा0
4	बेसन या किसी भी दलहन का आटा	1 कि0 ग्रा0
5	खेत के मेड़ या जंगल की मिट्टी	50 ग्राम (1 मुट्ठी)

विधि : उपरोक्त सामग्री को अच्छी प्रकार से मिला लें। आवश्यकतानुसार इसमें थोड़ा – थोड़ा गौमूत्र मिलाएं ताकि गोला बनाने लायक हो जाये। मिश्रण का 48 घंटे के लिए छाया में ढेर लगा दें। तत्पश्चात धूप में सुखायें, फिर लकड़ी से ढेलों को तोड़ कर छाननी से छानें एवं बोरी में भर कर रख लें। **इसे एक साल तक प्रयोग किया जा सकता है।**

बीजामृत (100 कि0 ग्रा0 बीज के लिए)

क्र0	सामग्री	मात्रा
1	पानी	20 लीटर
2	गौमूत्र	5 लीटर
3	गोबर	5 कि0 ग्रा0
4	अनबुझा चूना	250 ग्रा0
5	खेत के मेड़ या जंगल की मिट्टी	50 ग्राम (1 मुट्ठी)

विधि : उपरोक्त सामग्री को टंकी में घड़ी की सूई की दिशा में 2 – 3 मिनट तक घोलें एवं बोरी से ढक कर छांव में रख दें। सुबह – शाम, 2 – 2 मिनट घोलें। **इस घोल को 24 घंटे रखने के बाद बीजों को उपचारित करें।**

फसल सुरक्षा प्राकृतिक कीटरोधक

नीमास्त्र (रस चूसने वाले कीड़े, छोटी सूंडी/इल्लियों के लिए उपयोगी)

क्र0	सामग्री	मात्रा
1	पानी	100 लीटर
2	गौमूत्र	5 लीटर
3	गोबर	1 कि0 ग्रा0
4	नीम या स्थानीय* रूप से उपलब्ध पौधों में से किसी एक की हरी पत्तियां या सूखे फल	5 कि0 ग्रा0

विधि : दिए गये पौधों/झाड़ियों की हरी पत्तियां या सूखे फलों को कूट लें। कूटी हुई सामग्री को पानी में मिलाएं। गौमूत्र मिलाएं व तत्पश्चात गोबर मिला लें। मिश्रण को 48 घंटे बोरी से ढक कर छाया में रखें। मिश्रण को सुबह – शाम लकड़ी से घड़ी की सुई की दिशा में 2 – 2 मिनट तक घोलें। **48 घंटे के बाद कपड़े से छानकर, तुरन्त फसल पर छिड़काव करें।**

ब्रह्मास्त्र (बड़ी सूंडियों/इल्लियों के लिए उपयोगी)

क्र0	सामग्री	मात्रा
1	गौमूत्र	20 लीटर
2	(अ) आम, अमरूद, अरंडी के पत्तों की चटनी (ब) स्थानीय* पौधों मे से किसी दो के पत्तों की चटनी	2 – 2 कि0 ग्रा0

विधि : उपरोक्त पत्तों की चटनी को गौमूत्र में डालकर धीमी आंच पर एक उबाल आने तक गर्म करें। इसके बाद 48 घंटे तक ठंडा होने के लिए रख दें। 2.5 – 3 लीटर घोल को 200 लीटर पानी में मिला कर फसल पर छिड़काव करें। **घोल का प्रयोग 6 माह तक किया जा सकता है।**

फफूंदनाशक (फफूंद नियंत्रण के लिए उपयोगी)

क्र0	सामग्री	मात्रा
1	पानी	200 लीटर
2	खट्टी लस्सी (4 – 5 दिन पुरानी)	5 लीटर

विधि : पानी व खट्टी लस्सी को अच्छी प्रकार से मिलाकर छिड़काव करें। विशेष यह विषाणु (वायरस) नाशक भी है।

अग्नि-अस्त्र (रस चूसने वाले कीड़े, छोटी सूंडी/इल्लियों के लिए उपयोगी)

क्र0	सामग्री	मात्रा
1	स्थानीय* पौधों मे से किसी एक के पत्ते	5 कि0 ग्रा0
2	गौमूत्र	20 लीटर
3	तम्बाकू पाउडर	500 ग्राम
4	तीखी हरी मिर्च की चटनी	500 ग्राम
5	देशी लहसुन की चटनी	250 ग्राम

विधि : कूटे हुए पत्तों, तम्बाकू पाउडर, मिर्च की चटनी व लहसुन की चटनी को गौमूत्र में मिलाकर धीमी आंच पर एक उबाल आने तक गर्म करें। मिश्रण को 48 घंटे के लिए रख कर सुबह – शाम लकड़ी से घड़ी की सूई की दिशा में 2 – 3 मिनट तक घोलें। मिश्रण का 6 – 8 लीटर घोल 200 लीटर पानी में मिला कर फसल पर छिड़काव करें। **इसको 3 महीने के अंदर उपयोग कर लेना चाहिए।**

***स्थानीय रूप से उपलब्ध पौधे** जैसे कि दरेक, लेन्टाना, भांग, बरेयां, बिच्छूबूटी, बसूटी, बणा, कढ़ी पत्ता इत्यादि

सप्त-धान्यांकुर अर्क

क्र0	सामग्री	मात्रा
1	तिल	100 ग्राम
2	मूंग दाल, उड़द दाल, लोबिया, मोठ व चने के बीज	प्रत्येक 100 – 100 ग्राम
3	गेहूं के बीज	100 ग्राम

विधि : एक कटोरी में तिल के बीजों को थोड़े पानी में रातभर भिगोकर रखें। दूसरे दिन उपरोक्त बीजों को मिलाकर रातभर के लिए पानी में भिगोकर रख दें। तीसरे दिन सातों प्रकार के बीजों को पानी से निकालकर एक पोटली में बांध कर घर के अंदर टांग दें व पानी को सुरक्षित रख दें। फिर बीजों के अंकुरित होने के उपरान्त सभी बीजों को पीस कर चटनी की तरह बना लें। 200 लीटर जल, 10 लीटर गौमूत्र व बीजों का सुरक्षित पानी का मिश्रण तैयार करें। इसमें हाथों की सहायता से सातों प्रकार के बीजों की चटनी को लकड़ी के डण्डे की सहायता से मिला दें। घोल तैयार होने के बाद इसको बोरी से ढक कर दो घंटे तक रख दें। इसके बाद इसको कपड़े से छान लें। इस प्रकार सप्त – धान्यांकुर अर्क उपयोग के लिए तैयार है। इस अर्क को 48 घंटे के अन्दर – अन्दर उपयोग करें। फसल में इसका उपयोग दानों की दुग्धावस्था में, बाल्यावस्था (छोटी फलियों) में तथा फूलों की फसल में कली अवस्था में करें।

लाभ

- सप्त – धान्यांकुर अर्क छिड़कने से दानों पर चमक आती है।
- फलों का गिरना बन्द होता है।
- फली में दाने पूरे भरते हैं।
- दानों का आकार व भार बढ़ता है।
- दानों में सुगन्ध बढ़ती है।
- प्राकृतिक आपदाओं को सहन करने की शक्ति बढ़ती है।

विशेष (गोबर एवं गौमूत्र)

केवल देसी गाय के गोबर का उपयोग करें। आधा गोबर बैल का मिला सकते हैं लेकिन अकेले बैल का गोबर नहीं होना चाहिए। जर्सी और होल्स्टीन का मूत्र एवं गोबर वर्जित है। गोबर जितना ताजा एवं गौमूत्र जितना पुराना होगा उतना ही अच्छा होगा। जो गाय दूध नहीं देती है उसका गोबर व मूत्र उतना ही अधिक प्रभावशाली होता है।

नीमास्त्र

ब्रह्मास्त्र

अग्नि-अस्त्र

खट्टी लस्सी (फफूंदनाशक)